दिनांक :- 29-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड कला अनुशांगिक

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- तृतीय

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत

(Sources of Ancient Indian History)

सच्चा इतिहास एक वैज्ञानिक की भाँति उपलब्ध साधनों की समीक्षा करके अतीत का सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। उसके लिए साहित्यिक एवं पुरातात्विक साधनों के अतिरिक्त विदेशी विवरणों का भी अत्यधिक महत्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए शुद्ध ऐतिहासिक साहित्यिक सामग्री अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम उपलब्ध है। प्राचीन भारत के निवासी लेखन कला से अच्छी तरह परिचित

थे और उन्होंने अनेक विषयों पर उच्चकोटि के ग्रंथों की रचना की. लेकिन कोई ऐसा वैज्ञानिक प्रामाणिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं है जिसके आधार पर ऐतिहासिक घटनाओं का तिथि परक मूल्यांकन किया जा सके। प्राचीन भारत में युनान ने हिरोडोटस और रोम के लिवी जैसे इतिहास लेखक नहीं हुए। यही कारण है कि कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने प्राचीन भारतीयों पर यह अरोप लगाया है कि उसमें ऐतिहासिक बोध तथा इतिहास लेखन की प्रवृत्ति का अभाव था उनका मत है कि प्राचीन भारतीयों को इतिहास की ठीक संकल्पना ही नहीं थी। लेकिन पाश्चात्य विद्वानों की इस तरह की धारणा निराधार है। यह ठीक है कि प्राचीन भारतीयों ने वैसा इतिहास नहीं लिखा जैसा कि आजकल लिखा जाता है। न ही उन्होंने यूनानियों की तरह इतिहास ग्रंथ लिखे। यह सही है कि प्राचीन भारतीयों के

इतिहास लेखन का ढंग आधुनिक काल से भिन्न था। उनकी इतिहास की संकल्पना। आधुनिक इतिहासकारो की संकल्पना। से भिन्न थी! आधुनिक इतिसकार ऐतिहासिक घटनाओ में कार्य-कारण सम्बंध स्थापित करने का प्रयास करता है लेकिन प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओ का वर्णन करता था जिनसे जनसाधारण को लाभ होता था। वे उन घटनाओं को कोई महत्व नहीं देते थे जिनसे जनसाधारण को लाभ होने की आशा नहीं रहती थी! फिर भी भारत के प्राचीन साहित्य में इतिहास की सामाग्री भरी पड़ी है! अनेक काव्यों, महाकाव्यों और नाटको की रचना हुई जो तत्कालीन अवस्था पर यथेष्ठ प्रकाश डालते है। साहित्यिक स्त्रोतो के अतिरिक्त पुरातात्विक साधनो से भी हमे प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। पुरातत्ववेत्ताओ ने अपने अथक परिश्रम तथा खोजो से इतिहास के बहुत से साधन ढूंढ निकाले है जिनसे भारत के अतीत

पर काफी प्रकाश पड़ता है। अतएव प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के साधनों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है - साहित्यिक स्त्रोत और पुरातात्विक स्त्रोत (Archaeological Sources) पुरातात्विक साक्ष्य प्राचीन भारतीय इतिहास की उन घटनाओं की भी जानकारी देते हैं, जिनका विवरण साहित्यिक ग्रंथों में नहीं मिलता है। साथ ही भारतीय साहित्य तथा विदेशियों के विवरणों को पुष्ट करने में भी पुरातात्विक साक्ष्यों से सहायता मिलती है। उत्खननों में प्राप्त पुरावशेष, अभिलेख, मुद्रा, मृदभाण्ड इत्यादि भारतीय सभ्यता संस्कृति के विविध पक्षों को उजागर करते हैं। अतएव साहित्यिक स्त्रोतों के साथ-साथ पुरातात्विक साक्ष्यों की जानकारी आवश्यक है। सच तो यह कि प्राचीन भारतीय इतिहास के निरपेक्ष अध्ययन के लिए दोनों साधनों का सन्तुलित अध्ययन अपरिहार्य है।

पुरातात्विक स्त्रोत (Archaeological sources)

प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन के लिए साहित्यिक साधनों की अपेक्षा पुरातात्विक सामग्री विशेष महत्वपूर्ण और अधिक विश्वसनीय है। कारण है कि साहित्यिक ग्रंथो का रचनाकाल ठीक से ज्ञात नही होने के कारण उनके किसी काल विशेष की सामाजिक - आर्थिक स्थिति का सही ज्ञान नही होता। साहित्यिक साधनों से प्राप्त जानकारी पूर्णतः निष्पक्ष हो भी नही सकती क्योंकि अधिकांश ग्रंथों की रचना लेखक के दृष्टिकोण से प्रभावित है। अधिकांश ग्रंथ धार्मिक भावना या पूर्वाग्रह से प्रेरित होकर लिखे गये थे। उदाहरण के लिए चीनी यात्रियों ने भारतीय समाज का वर्णन केवल बौद्ध दृष्टिकोण से ही किया। कभी-कभी ग्रंथों की प्रतिलिपि करने वालों ने अपनी इच्छा अनुसार ग्रंथो में नये प्रकरण जोड़ भी दिये। ऐसी स्थिति में साहित्यिक साधनों से प्राप्त जानकारी पूर्णतः

निष्पक्ष नहीं हो सकती है। अतएव निष्पक्ष ढंग से प्राचीन भारतीय इतिहास की रचना के लिए हमें पुरातात्विक साधनों का सहारा लेना पड़ता है।

पुरातात्विक सामग्री विभिन्न प्रकार के है जैसे प्राचीन भवन तथा स्मारकों के अवशेष, मृण्मूर्तियाँ, मिट्टी के बरतन और खिलौने, सिक्के तथा हथियार आदि। इन सामाग्रीयों की सहायता से प्राचीन भारतीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। हड़प्पा-सभ्यता सम्बंधित हमारी जानकारी पूर्णतः पुरातात्विक सामग्री पर ही आधारित है। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, रोपड़, कालीबंगा आदि स्थान की खुदाई मे अनेक सामाग्रियाँ मिली है।

जो हड़प्पा-सभ्यता के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालते है। शिशुपालगढ़, राजगृह, अरिकामेडु आदि स्थानों से प्राप्त सामग्री के आधार पर भारतीय इतिहास के निर्माण मे काफी सहायता मिलती है। इसी प्रकार पाटलिपुत्र, वैशाली

चिरन्द, चम्पा, बिक्रमशीला, नालन्दा, मथुरा, कौशाम्बी, हस्तिनापुर इत्यादि स्थलों की खुदाई में प्राप्त सामग्रियों के आधार पर स्थान विशेष पर प्रचलित सभ्यता का अनुमान लगाया जा सकता है। पुरातात्विक सामग्रियों में हेर-फेर अथवा अतिशयोक्ति की सम्भावना नहीं रहती है, इसलिए इनके आधार पर किसी सभ्यता विशेष से सम्बंधित मानव के भौतिक एवं सांस्कृतिक जीवन का सही पता लगाया जा सकता है।

अभिलेख (Inscriptions) :- पुरातात्विक स्त्रोत में सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत अभिलेख है। उत्कीर्ण लेखों को चार श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। गुफालेख, शिलालेख, स्तम्भ लेख और ताम्रपत्र लेख। इन अभिलेखों से प्राचीन भारतीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर यथेष्ठ प्रकाश पड़ता है। इनमें प्राचीन राजाओं के नाम कार्य, वंश, तिथि और उनसे सम्बंधित घटनाओं का पता चलता है।

Scanned with CamScanner